# फ्री लाइब्रेरीज ज़िंदाबाद

नेटवर्क समाचार का त्रैमासिक दौर

अंक 4 अक्तूबर २२ - दिसम्बर २२

## दीवारों के पीछे की दुनिया| पुस्तकालयों में आश्रय की खोज

हमारे देश में अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्थाओं के कारण स्वतंत्र नागरिकों के लिए भी आम जानकारी और निःशुल्क पुस्तकालय दुर्लभ हैं। जहाँ पुस्तकालय के इस्तिमाल और पढ़ने के अधिकार की बात आती भी है वहाँ जेलों और बाल-देखभाल संस्थानों में रहनेवाले वयस्क और बच्चों को अक़सर भुला दिया जाता है। जातिवाद और अन्य वजहों से कुछ समुदायों के सदस्य जेलों में ज़्यादा तादाद में पाए जाते हैं। ऐसी संस्थानों में अच्छे से संचलित निःशुल्क लाइब्रेरी की स्थापना ऐसे लोगों के लिए एक सुनहरा मौक़ा हो सकती है जो पढ़ना चाहते हैं, अपने अधिकारों के बारे में जानना चाहते है और पढ़ने का आनंद लेना चाहते है। अगर जेल पुस्तकालय, स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के साथ मिलकर काम करें तो वे पाठकों के लिए विभिन्न प्रकार के साहित्य तक पहुँचने के मार्ग खोल सकते हैं। इस से कुछ हद तक यह बात भी सुनिश्चित होगी कि प्रशासन उन नागरिकों की भी ज़िम्मेदारी ले जो कमज़ोर हैं और अलग अलग कारणों से इन संस्थानों में कैद हैं।

हमारे 'फ्री लाइब्रेरी नेटवर्क' (एफ.एल.एन.) की सदस्य संस्था 'प्रयास' ने महाराष्ट्र में इन कड़ियों को सफलतापूर्वक स्थापित किया है। उन डरावनी दीवारों के पीछे जहाँ लोग आसानी से निराशा में डूब सकते है, व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से पढ़ना लोगों को निराशा के समुन्दर से बाहर निकालने में मदद कर सकता है। बाल-देखभाल संस्थानों में रहने वाले बच्चे, जो कई कारणों से एक असुरक्षित जीवन जी रहें हैं, पुस्तकालयों और किताबों में अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। हमारे नेटवर्क के सदस्य 'अधवन', मुंबई के चाइल्ड केयर संस्थानों में अपने काम के माध्यम से बच्चों के लिए अभिव्यक्ति और अपनी बाते औरों के साथ साझा करने के लिए आवश्यक जगह बना रहे हैं। इसी वजह से 'निः शुल्क पुस्तकालय नेटवर्क' अपने उन सदस्यों के साथ एकजुटता से खड़ा है जो ऐसे संस्थानों में पुस्तकालय खुलवाने के लिए निरंतर काम करते हैं ताकि संस्थानों की भयानक चारदीवारी के पीछे बसे लोग उन में शरण ले सकें।

**पूनम भोंसले**

**एफएलएन कोर ग्रुप सदस्य**

## हम हैं एफ.एल.एन !

एफ.एल.एन सदस्य निःशुल्क या मुफ़्त पुस्तकालयों के निर्माण, संचालन और प्रचार के लिए काम करते हैं जो जाति, वर्ग, धर्म, लिंग और यौन पहचान या विकलांगता के भेद-भाव के बिना सभी का स्वागत करते हैं। हम सभी को पुस्तकों को मुफ़्त पहुँचाने और उन नए पाठकों को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, जिनके पास शायद स्वयं किताबें पढ़ पाने के साधन अभी नहीं है।

वेबसाइट- https://www.fln.org.in/

ट्विटर: @FreeLibNetwork

इंस्टा: @freelibrariesnetworkfln फेसबुक: @freelibrariesnetwork

ईमेल: freelibrariesnetworkfln@gmail.com

और पुस्तक वितरण के लिए:booksforallFLN@gmail.com

# एफ. एल. एन कार्यक्रम और कार्यशालाएं

## रीड अलाउड और पुस्तकालयों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों की कार्यशाला | 15 अक्टूबर 2022

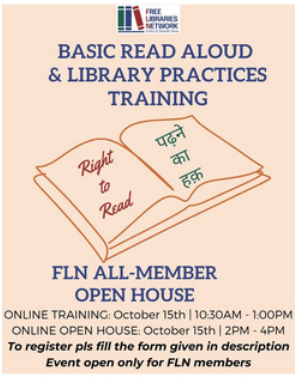


एफ.एल.एन. (पूनम भोसले, पूर्णिमा, ऋतुपर्णा, द कम्यूनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट - TCLP) ने वार्षिक "रीड अलाउड और पुस्तकालयों के लिया सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों" कार्यशाला का आयोजन और संचालन किया, जिसमे लगभग 70 सदस्यों ने भाग लिया । कार्यशाला में प्रतिभागियों को 'रीड-अलाउड' यानि पढ़ कर सुनाना क्यों काम करता है और वह क्यों आवश्यक है के बारे में गहराई से सोचने का मौका मिला। कहानियाँ 'पढ़कर सुनाने' की रणनीति पहली पीढ़ी के पाठकों का किताबों की दुनिया में स्वागत करने के लिए एक पहला पड़ाव है। यह रणनीति लोगों को अपनी आवाज़ खोजने में भी मदद करती हैं और पढ़ कर सुनाने से खुद को अभिव्यक्त करने के लिए लोगों में आत्मविश्वास पैदा होता हैं। प्रशिक्षण मुख्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी में था, और कुछ डेमो सेगमेंट मराठी, तमिल और असमिया में पेश किए गए थे। प्रशिक्षण सामग्री मराठी, असमिया और तमिल में भी उपलब्ध कराई गई थी।

दो नए शानदार और आवश्यक मॉड्यूल पेश किए गए: 1. सदस्य-से-सदस्य को 'पढ़कर सुनाना' यानि लाइब्रेरी में पढ़ कर सुनाने के लिए जगह का प्रबंध करना और इस प्रथा को बढ़ावा देना ताकि पुस्तकालय के सदस्य आत्मविश्वास से एक-दूसरे को कहानियाँ पढ़कर सुनाएँ। 2. पुस्तकालय सदस्यों में नेतृत्व के गुण का विकास। इन दोनों मॉड्यूल को पेश करने के लिए पहले एक पारंपरिक रूप से रीड अलाउड का प्रदर्शन किया गया था और फिर पीयर-टू-पीयर (सदस्य-से-सदस्य) रीड अलाउड के वीडियो दिखाए गए थे। सभी सदस्यों को छोटे समूहों में शामिल करने के लिए ब्रैकआउट रूम का उपयोग किया गया था। 'पढ़कर सुनाना'/ 'रीड अलाउड' के लिए टिप्स, क्या करें, क्या न करें, कैसे करें और क्यों करें पर चर्चा की गई। सत्र की समाप्ति TCLP, बंसा कम्युनिटी लाइब्रेरी और स्कूल फॉर डेमोक्रेसी-लोकतंत्रशाला द्वारा नेतृत्व के गुण के विकास के तरीक़ों पर चर्चा से हुई ।

इस प्रशिक्षण के बारे में अधिक जानकारी और अन्य प्रश्नों के लिए एफ एल एन कोर टीम सदस्य पूनम से poonambhonsle03@gmail.com पर संपर्क करें । प्रशिक्षण सामग्री का लिंक यहां उपलब्ध है - Link to the training material - https://drive.google.com/file/d/1SuTPsV27hF8k-qA-CmffUCFcEBqJ6Obr/view?usp=share_link Other resources- https://drive.google.com/file/d/1GsYGAhxwZFiD6PgLxzIlgJfPflG0g1It/view?usp=share_link

## ओपन हाउस | 15 अक्टूबर 2022

एफ.एल.एन. के दूसरे ओपन हाउस सत्र में, लगभग 45 एफ.एल.एन. लाइब्रेरी सदस्यों ने पुस्तकालय प्रथाओं से संबंधित मुद्दों पर एवं मुफ़्त ("फ्री") समुदाय-संचालित पुस्तकालयों को चलाने की चुनौतियों के बारे में बात की। इस सत्र का डिज़ाइन एक-दूसरे से प्रश्न पूछने, चुनौतियों को साझा करने और उनके समाधानों के विकास पर केंद्रित था। सत्र से पहले वितरित किए गए गूगल फॉर्म के माध्यम से, सदस्यों को मुफ़्त सदस्यता (free membership), सभी के लिए पहुंच (access to all), संसाधनों, पठन कार्यक्रमों, सामुदायिक जुड़ाव और सामुदायिक स्वामित्व (मिल्कियत) से जुड़ी प्रमुख चिंताओं को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

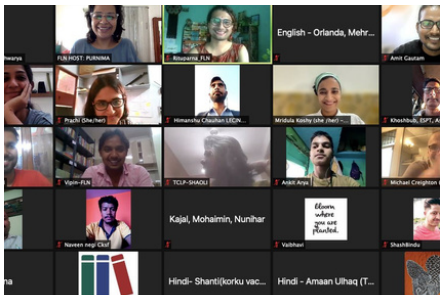


एफ.एल.एन. पुस्तकालयों ने बजट से जुड़े संघर्ष के बारे में बात की। इस संदर्भ में हमने फिर से दोहराया कि "फ्री" का क्या अर्थ है - मुफ़्त सदस्यता और पहुँच के साथ भेदभाव से मुक्ति। पुस्तकालयों ने उनके काम के लिए पैसे जुटाने के लिए वास्तविक संघर्ष और वित्तीय असुरक्षा पर चर्चा की, जो पुस्तकालयों के कामकाज और कार्यक्रमों के संचालन में बाधा है। धन संग्रह (फंडिंग) के लिए अवसर - जैसे स्थानीय समुदायों से फंड जुटाना, CSR फंडिंग हासिल करना, ग्रांट आधारित फंडिंग आदि पर एक संक्षिप्त चर्चा हुई। इसके बाद सदस्यों ने कहानियाँ पढ़कर सुनाने से जुड़े अपने अनुभव साझा किए जिसमें 'रीड अलाउड' करते समय क्या सही हुआ, क्या गलत, और आम तौर पर आने वाली चुनौतियों एवं उनके समाधानों पर चर्चा हुई । सत्र के आखिरी भाग में, समावेशन यानि सभी को शामिल करने के बारे में गहरी चर्चा हुई - जैसे अपने व्यवहारों और सोच पर आत्मनिरीक्षण करना, पहले से बंधी हुई धारणाओं को पहचानना और यह सब पुस्तकालय नीतियों

को कैसे प्रभावित करता है, इस पर गौर करना। इन बिंदुओं पर भी चर्चा हुई - बाल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नीतियों का होना क्यों आवश्यक है, उन सदस्यों तक पहुँच पाना क्यों ज़रूरी हैं जो अन्यथा पुस्तकालयों तक नहीं पहुँच पाते, और ये नीतियां समावेशिता के लिए कैसे महत्वपूर्ण हैं। freelibrariesnetworkfln@gmail.com पर चर्चा जारी रखिए।

## प्रकाशक कनेक्ट | एकतारा 10 | दिसंबर 22

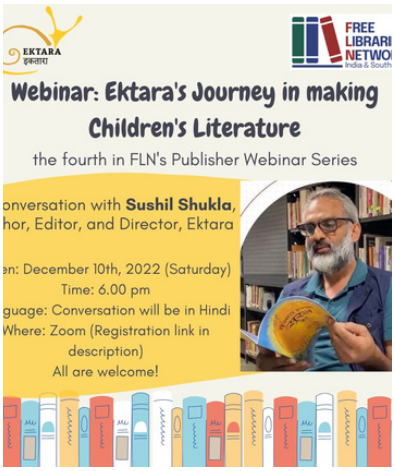


इस वेबिनार में, जो प्रकाशकों के लिए वेबिनार की हमारी श्रृंखला में चौथा था, हमने एकतारा के लेखक, संपादक और निर्देशक सुशील शुक्ला को सुनने के लिए 56 से अधिक प्रतिभागियों को शामिल होते देखा। सुशील ने बाल साहित्य की दुनिया में एकतारा की यात्रा, उनके संपादकीय विकल्पों और उन विकल्पों पर प्रभाव रखने वाली राजनीति के बारे में बात की। सुशील ने ऐसे साहित्य के निर्माण की बात की जो बच्चों के अनुभवों को सच्चाई से दर्शाता है, चाहे वह कुछ ऐसी सामाजिक वास्तविकताओं दिखाए जो हमें असहज कर दें। एकतारा बच्चों को व्यसकों के समान मानती है और उनकी बुद्धिमत्ता का आदर करती है। एकतारा किताबों की ताकत और पढ़ने के अधिकार में विश्वास रखती है। सामुदायिक पुस्तकालयों में इस अधिकार को वास्तविकता बनाने में श्री शुक्ला के विश्वास से हमें खुशी हुई। सुशील ने एकतारा के विभिन्न प्रकाशनों, विशेष रूप से पत्रिकाओं प्लूटो और साइकिल से शक्तिशाली छवियों के उपयोग से पाठ और छवियों के बीच संबंध को समझाया।

प्रश्नोत्तर सत्र में सुशील ने फ्री लाइब्रेरी नेटवर्क के प्रति एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा कि एक प्रकाशक की भूमिका केवल बिक्री बढ़ाने की नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने में भी है कि साहित्य सभी के लिए सुलभ हो। सवाल और उत्तर के माध्यम से एक और उत्साहजनक संबंध बना - सुशील ने कहा की एकतारा एफ एल एन के साथ साझेदारी में युवा लेखकों के लिए क्षेत्रीय भाषाओँ में कार्यशालाएँ आयोजित करने में हमारी मदद करेगी। हम एकतारा के फ्री लाइब्रेरी नेटवर्क के मजबूत सहयोगी होने और सभी के लिए पुस्तकालय और पढ़ने के अधिकार को एक वास्तविकता बनाने में हमारे समर्थक होने की उम्मीद करते हैं।

You tube recording of webinar available here- https://www.youtube.com/watch?v=EXkgrv3ZLpY

## बातचीत और दौरे

एफ.एल.एन. सदस्य पुस्तकालय 'Let's Educate Children In Need-LECIN' ने प्रारंभिक शिक्षा में मुफ़्त पुस्तकालयों की भूमिका पर एक इंस्टाग्राम लाइव बातचीत की मेज़बानी की। इस वार्ता का संचालन LECIN के अंकुश ने किया और पैनल में एफ.एल.एन. की निदेशक पूर्णिमा राव और एफ.एल.एन. के महासचिव और बंसा कम्युनिटी लाइब्रेरी के संस्थापक, जतिन ललित सिंह शामिल थे। इंस्टाग्राम लाइव में एफ.एल.एन. की भूमिका, भारत में फ्री पुस्तकालयों की आवश्यकता और शुरुआती पाठकों (3-6 वर्ष) के संदर्भ में लाइब्रेरी के मुफ़्त या "फ्री" होने के महत्व के बारे में चर्चा की गई। तीनों ने समावेशी रीड अलाउड या पढ़ कर सुनाने के महत्व पर, पढ़ने की प्रथा को और मज़बूत करने के लिए लाइब्रेरी में अनुकूल वातावरण क़ायम करने पर, बच्चों को स्वतंत्र रूप से किताबें चुनने और लेने का अधिकार देकर किताबों की दुनिया की एक झलक देने पर भी चर्चा की। बच्चों के साथ बातचीत करते समय सहानुभूति, समझ और करुणा की आवश्यकता पर बल दिया गया। आप पूरी बातचीत को इंस्टाग्राम पर @info.lecin पर देख सकते हैं ।

इस तिमाही में एफ.एल.एन. सदस्यों ने एक दूसरे के पुस्तकालयों का दौरा भी किया और उनसे सीखा। स्वाति (मुहीन-वाराणसी) और राम्या (चॉक पीस चेन्नई) ने दिल्ली में टीसीएलपी का दौरा किया। जतिन (बंसा कम्युनिटी लाइब्रेरी) ने होप हीलिंग फाउंडेशन (संभल यूपी) का दौरा किया। एफ.एल.एन. का हिस्सा बनने का एक आनंद यह भी है कि एक दूसरे से मिलकर सीखने का मौका मिलता है। अपने निकट के किसी एफ.एल.एन. सदस्य लाइब्रेरी जाने की कोशिश ज़रूर करें।

# अन्य एफ. एल. एनसमाचार

## ग्रेट बुक गिव अवै / किताबों का महा दान

दी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट का वार्षिक फण्ड रेज़िंग या धन संचय कार्यक्रम "किताबों का महा दान" 3 और 4 दिसंबर को नई दिल्ली में इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के चौथे वर्ष में एक नया इज़ाफ़ा था एक समर्पित एफ.एल.एन. कियोस्क, जो एफ.एल.एन. सदस्य पुस्तकालयों जैसे बंसा कम्युनिटी लाइब्रेरी, स्कूल फॉर डेमोक्रेसी-लोकतंत्रशाला, LECIN, शेयर ए बुक इंडिया, HHH फाउंडेशन, बत्सला पुरोहित, आगाज़ थिएटर ट्रस्ट और अन्य सदस्यों ने संचालित किया। कियोस्क पर आने वालों को निःशुल्क पुस्तकालय आंदोलन और नेटवर्क पुस्तकालयों के काम के बारे में बताया गया। यह नेटवर्क पुस्तकालयों और उनके सदस्यों के लिए किताबों, कला और सौहार्द से घिरे वातावरण में साथ जुड़ने का एक शानदार अवसर था।.

आयोजन के दो दिनों में सैकड़ों लोग आए। सम्मिलित होने वालों ने हजारों किताबें छांटी, कुटुंब फाउंडेशन के कपिल पांडेय के कहानी सुनाने के सत्र का आनंद लिया, एक पॉप अप पुस्तकालय और कला प्रदर्शनी का दौरा किया और एक थिएटर कार्यशाला में भाग लिया। वास्तव एक 7, अनुभूति, कात्यायनी और शिवानी और 10टक ने अद्भुत लाइव संगीत प्रदर्शन भी किये। यह आयोजन न केवल धन जुटाने का अवसर था बल्कि दिल्ली के आम जनता के बीच इस बारे में जागरूकता बढ़ाने का अवसर था कि मुफ्त पुस्तकालय क्यों मायने रखते हैं। आगंतुकों ने दान दिया, सामुदायिक पुस्तकालयों को समर्थन देने का वचन लिया और सामुदायिक पुस्तकालयों और मुफ़्त पुस्तकालय आंदोलन के बारे में कुछ अद्भुत किताबें और सीख लेकर भी गए।

## पंजीकरण और अनुपालन

नवंबर 2022 से एफ.एल.एन. को हर प्रकार की वस्तुएँ और धन का दान लेनी की अनुमति है। इन सब से एफ.एल.एन. अपने कार्यक्रम चलाती हैं और अपनी व्यापक सोच को आगे बढ़ाने और फैलाने का काम कर सकती है।

## इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन्स एंड इंस्टीट्यूशंस (IFLA)

एफ.एल.एन. अब इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन्स एंड इंस्टीट्यूशंस (IFLA) का सदस्य है। इस सदस्यता के माध्यम से एफ.एल.एन. के पास अब विश्व स्तर का ज्ञान, पुस्तकालय चालकों के नेटवर्क और पुस्तकालयों के लिया सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों पर सार्वभौमिक रूप से अनुशंसित दिशानिर्देशों और मानकों तक की पहुँच है। एफ.एल.एन. उम्मीद करता है कि इस सदस्यता के सहारे वह भारत के मुफ़्त पुस्तकालय आंदोलन की तरफ कुछ अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित कर पायेगा और भारतीय और दक्षिण एशियाई संदर्भ में ज़मीनी पुस्तकालयों की वैश्विक समझ को मज़बूत कर पायेगा।

# सदस्य पुस्तकालयों पर स्पॉटलाइट

**निःशुल्क पुस्तकालय नेटवर्क के कुछ सदस्यों का परिचय। कृपया यह कॉलम देखें, हमारे FLN पुस्तकालयों के बारे में अधिक जानने के लिए । इस अंक में हाइलाइट किए गए दो विशेष प्रकार के पुस्तकालय कार्यक्रम हैं जो अनूठी चुनौतियों के साथ संचालित होते हैं - बाल संरक्षण संस्थानों में पुस्तकालय और जेलों में पुस्तकालय।**

# प्रयास |सुधाकर मरुपुरी से बातचीत

प्रयास टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस का एक सामाजिक कार्य प्रदर्शन प्रोजेक्ट है। 1990 में स्थापित, प्रयास कैदियों के अधिकारों और पुनर्वास के संबंध में सेवा पहुँचाने, प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रलेखन, हिरासत/संस्थागत अधिकारों और नीतिगत बदलाव पर जेलों के साथ काम करते हैं। उनके कई अन्य कार्यों के अलावा, प्रयास ने महाराष्ट्र की जेलों में पुस्तकालय की सुविधा सुनिश्चित कराने में अहम भूमिका निभाई है। वे वर्तमान में महाराष्ट्र में मुंबई, ठाणे और लातूर और गुजरात में भरूच में काम करते हैं । प्रयास हिरासत के दौरान लागू अधिकारों के क्षेत्र में कानूनी सहायता, पारिवारिक समर्थन, अनुसंधान और एडवोकेसी के लिए भी काम करते हैं।

**अनूठी चुनौतियाँ:** जितने लोगों के लिए जेलें बनाई जाती हैं, उनमें हमेशा उस तादाद से कहीं अधिक लोग रहते हैं - अपराधी भी, और वे भी जिनकी सुनवाई ज़ारी है और जिन्हें अभी किसी अदालत ने दोषी क़रार नहीं दिया है। जेलें भी विभिन्न प्रकार की होती हैं: खुली जेलें, केवल अपराधियों के लिए जेलें, महिला जेल आदि। 6 वर्ष तक के बच्चों को जेलों में अपनी माताओं के साथ रहने की अनुमति है। हालाँकि कारागारों के नियम अनुसार जेलों में क़ैदियों के लिए कई सुविधाएं, जिनमें पुस्तकालय भी शामिल है, होनी चाहिए, अधिकांश जेलों में जगह की कमी के कारण पूर्णकालिक और स्थायी पुस्तकालय नहीं हैं। कैदी अलग-अलग उम्र, अलग-अलग जीवन चरणों में, अलग-अलग पृष्ठभूमि और क्षमताओं के साथ कारगार सिस्टम में प्रवेश करते हैं। इनमे से कई अंडरट्रायल हैं, और जेल में समय काट रहे हैं जो कि उनकी सज़ा से अधिक हो सकता है (यदि उन्हें भविष्य में सज़ा सुनाई भी जाती है)। स्वतंत्रता का अधिकार खो देने के बाद, कैदियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अन्य सभी बुनियादी अधिकारों को भी भूल जाएँ। प्रयास के पुस्तकालय कार्यक्रम ने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया है कि सभी क़ैदी किताबों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं तक पहुँच सकें, ताकि वह बाहरी दुनिया से जुड़े रह सकें, खुद को विकसित और शिक्षित कर सकें और अपने दिमाग को नकारात्मकता से बचा कर रख सकें। प्रयास दूसरे राज्यों में भी कैदियों और जेल अधिकारियों के बीच सलाह, प्रचार और एडवोकेसी के कार्य करता है ताकि सब को जानकारी और सूचना हासिल हो।

**काम करने का तरीका:** पुस्तकालय कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कैदियों के पास जानकारी तक पहुँच हो। प्रयास महाराष्ट्र राज्य सरकार और राज्य एवं ज़िला पुस्तकालय अधिकारियों के साथ इस उद्देश्य को सार्थक करने के लिए अथक परिश्रम करता है। प्रयास की कोशिशों के कारण, राज्य के पुस्तकालयों ने जेलों को सदस्यों के रूप में मान्यता दी है और वे नियमित रूप से जेलों में कई तरह तरह की किताबें भेजने की व्यवस्था करते हैं। आधारभूत संरचना सुविधाओं की कमी के कारण जेलों में न तो पुस्तकालय की जगह है और न ही लाइब्रेरियन की। शिक्षक या सामाजिक कार्यकर्ता किताबों को जेलों में ले जाते हैं, जहाँ कैदी अपने बैरक के लिए तय एक विशिष्ट दिन पर किताबें चुनते हैं और उन्हें वापस करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। जेलों में स्वाभाविक रूप से पुस्तक हानि और क्षति अधिक होती है, क्योंकि कैदियों के पास अपने सामान की सुरक्षा के लिए कोई जगह या साधन नहीं है। प्रयास राज्य के सार्वजनिक पुस्तकालयों से इन विशिष्ट परिस्थितियों को पहचानने और नुकसान या क्षति को दंडित न करने का आग्रह कर रहा है। जबकि कुछ प्रगति हुई है, फिर भी कई जिला और राज्य पुस्तकालय अभी भी जेलों से सदस्यता शुल्क लेते हैं और नुकसान की भरपाई कराते हैं। प्रयास पुस्तकालय चलाने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है। सुधाकर जेलों में पुस्तकालय की सेवा के लिए अन्य राज्य संसाधनों का लाभ उठाने के तरीके और साधन खोजने पर लगातार काम कर रहे हैं। प्रयास ने जेल पुस्तकालयों के समर्थन के लिए कलेक्टरों की शिक्षा निधि को उपयोग में लाने के लिए याचिका दायर की है। प्रयास जेलों को मुफ़्त में किताबें उपलब्ध कराने के तरीके और साधन भी खोज रहा है जैसे कि राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन जैसे राष्ट्रीय फाउंडेशनों के पास उपलब्ध पुस्तकों का लाभ उठाकर या निजी दान के माध्यम से। प्रयास पुस्तकालय कार्यक्रम का विस्तार बाल देखभाल संस्थानों और महिलाओं के लिए सुरक्षात्मक घरों में भी कर रहा है। कानूनी सहायता प्रदान करने, जागरूकता कार्यक्रम बनाने, पुनर्वास कार्यक्रमों के लिए जानकारी और सहायता प्रदान करने जैसे कार्यों की एक बड़ी छतरी के नीचे, प्रयास का काम सामाजिक-आर्थिक रूप से कमज़ोर समूहों और बहिष्कृत समुदायों को अपने दायरे में लाना भी है।

**विरोधी मांगों के बीच संतुलन:** सुधाकर ने कैदियों की मांगों और समाज या जेल अधिकारियों द्वारा अवांछनीय समझी जाने वाली सामग्री के बीच संतुलन बनाये रखने की आवश्यकता के बारे में बात की। राजद्रोह को बढ़ावा देने वाली और अपराध को महिमामंडित करने वाली किताबों को ब्लैक लिस्ट या वर्जित किया जाता है। जेल अधिकारियों और प्रयास को एक तनावपूर्ण माहौल में काम करना पड़ता है जहाँ एक तरफ तो गृह मंत्रालय के निर्देश हैं कि जेलों में उपलब्ध साहित्य पर कड़ी नज़र रखी जाए और दूसरी तरफ उच्च न्यायालयों ने जेल अधिकारीयों को फटकार लगाई है और कैदियों को सभी प्रकार की किताबें उपलब्ध कराने का आदेश दिया है।

**सकारात्मक बिंदु:** प्रयास के काम ने महाराष्ट्र जेलों की काया पलट कर दी है - उन्होंने यह सुनिश्चित कर दिया है कि किताबों के प्रासंगिक और विविध संग्रह वहाँ उपलब्ध हैं। इन पुस्तकालयों को यह ध्यान में रखना पड़ता है कि उनकी सेवाएं विस्तृत एवं विभिन्न आयु समूहों और विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित दोषियों, विचाराधीन कैदियों, महिलाओं, बच्चों आदि के अलग अलग समूहों के लिए उचित हों। प्रयास ने शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों की मांग में वृद्धि देखी है। सुधाकर की कोशिश है कि कैदियों को सूचनात्मक पत्रिकाएं, सरकारों द्वारा जारी समाचारपत्र, वार्षिक साहित्यिक डाइजेस्ट इत्यादि जेल मे उप्लब्ध हों। उन्होंने विशेष रूप से कुछ जेलों में पुस्तकालय जेल कार्यक्रमों के फलने-फूलने की बात कही, जहाँ जोशीले ज़िला कलेक्टरऔर जेल अधिकारियों ने प्रदर्शित किया है कि किताबें कैसे जेलों को बदल सकती हैं। प्रयास के प्रचार से महाराष्ट्र से बाहर की जेलों में भी फ़र्क देखने को मिला है।

**नकारात्मक बिंदु:** आधारभूत संरचना और जगह की कमी बड़ी चुनौतियां हैं। कैदी मानसिक और शारीरिक आघात से जूझ रहे हैं । जेल के अंदर और बाहर, कैदी हिंसा और दुर्व्यवहार का सामना करते हैं। क़ैदियों का किताबें और जानकारी तक पहुँच पाना स्थानीय जेल अधिकारियों के हाथ में है, और इस वजह से एक जेल से दूसरे जेल के नियमों और सुविधाओं में भिन्नताएं हैं। न्यायपालिका जो एक बार में करोड़ों मुकद्दमों में फँसी है और लंबी आपराधिक परीक्षण प्रक्रिया इस समस्या को बढ़ाती है। इन सभी चुनौतियों के सामने जानकारी और पुस्तकों तक पहुँच सुनिश्चित करना अत्याधिक कठिन है। इन सब के बावजूद प्रयास इस कमी को दूर करने के लिए हर तरह के छोटे-बड़े कार्य और प्रयास करता रहता है।

**एफ.एल.एन कनेक्ट:** सुधाकर ने विविध पुस्तकों का संग्रह बनाने के लिए मुफ़्त लाइब्रेरी नेटवर्क (एफ.एल.एन.) के "बुक्स फॉर ऑल" (सभी के लिए किताबें) प्रोग्राम का उपयोग किया। उनका मानना है कि एफ.एल.एन. नेटवर्क बहुत कुछ हासिल कर सकता है - विशेष रूप से पुस्तकालयों और सरकार की तरफ से सार्वजनिक रूप से पुस्तकालय उपलब्ध कराने से समुदाय पर उनके परिवर्तनकारी प्रभाव की वकालत करने में। उनका यह भी मानना है कि लाइब्रेरियन के प्रशिक्षण और पुस्तकालय प्रथाओं और प्रणालियों पर प्रशिक्षण आवश्यक है और वह एफ.एल.एन. के साथ मिल कर भविष्य में इस पर आगे काम करना चाहेंगे।

**प्रयास | वेबसाइट**-: https://www.tiss.edu/view/11/projects/prayas/ **ईमेल** prayas_1990@rediffmail.com, and prayas.rnd@gmail.com

## अध्वन फाउंडेशन | मेघा धरणीधारका से बातचीत

अध्वन फाउंडेशन अनाथालयों, बाल गृहों और आश्रय गृहों जैसे बाल देखभाल संस्थानों में रहने वाले बच्चों को पुस्तकालय कार्यक्रमों के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रहा है । यह कार्यक्रम बच्चों की साक्षरता का समर्थन करने के लिए, जीवन कौशल को बढ़ाते के लिए और कुशल पाठक बनाने के उद्देश्य से चल रहे हैं । 2019 से संचालित, अधवन फअब आशा सदन, मुंबई में कार्य कर रहे है - जो कि एक बच्चों का घर और गोद लेने का केंद्र है। अध्वन अपने पुस्तकालय पहलों को मज़बूत करने के लिए संगठनों को प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। अधवन का कार्य और प्रथाएँ बूकवर्म, गोवा संस्था द्वारा लाइब्रेरी एदुकेटर कोर्स (Library Educator Course) से मिली सीख पर आधारित है।

**अनोखी चुनौतियाँ:** यह पुस्तकालय कार्यक्रम उन बच्चों के लिए है जिन्होंने हिंसा, शोषण, दुर्व्यवहार या उपेक्षा का अनुभव किया है। इस तरह के बाल देखभाल संस्थान बड़े समूहों में बच्चों को घर और देखबाल कि सुविधाएँ देते है। इनके पास सीमित संसाधन होते हैं और आमतौर पर इनमें कड़े संरचित दिन होते हैं जो आज्ञाकारिता और अनुरूपता को पुरस्कृत करते हैं। इस कारण इन बच्चों और युवा किशोरियों को अभिव्यक्ति या प्रयोग करने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता है। यह बच्चे अलग-अलग समय पर इन बाल घरों में प्रवेश करते हैं, कभी-कभी

अपने परिवारों में जीवन की मजबूत यादों और उन दर्दनाक परिस्थितियों के साथ जिसके कारण वह इन संस्थाओं तक पहुचे हैं। वे पढ़ने और लिखने की क्षमता के विभिन्न स्तरों के साथ एवं विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। इस तरह का पुस्तकालय कार्यक्रम इन बच्चों और युवा किशोरियों के लिए स्वयं को अभिव्यक्त करने, प्रयोग करने और परिणामों के दबाव के बिना अनुभव प्राप्त करने के लिए एक स्थान बन जाता है और एक ऐसा मौका देता है जहां वे अपने व्यक्तिगत दुखों का सामना करने के लिए संसाधनों और तंत्रों को प्राप्त कर पाएँ ।

**अध्वन कैसे काम करता हैं:** बाल घर में एक सामान्य जगह को पुस्तकालय में बदल दिया जाता है। बाल घर में रहने वाले बच्चों के लिए पुस्तकालय एक सुरक्षित और प्रेरक स्थान बन जाता है जहाँ बच्चे न केवल पढ़ सकते हैं और कहानियों से जुड़ सकते हैं बल्कि प्रश्न भी पूछ सकते हैं और स्वायत्तता का प्रयोग भी कर सकते हैं। बच्चे कौन सी किताबें पढ़ना चाहते हैं या वे किन गतिविधियों में जुड़ना चाहते हैं, यह चुनकर अपनी पसंद व्यक्त करते हैं। बच्चे सप्ताह के लिए किताबें जारी करते हैं और संस्था में अन्य बच्चों के साथ किताबों की अदला-बदली और उन पर चर्चा भी होती रहती हैं ।
अभी पुस्तकालय कार्यक्रम में 3 से 6 वर्ष की आयु के लगभग 30 बच्चे और 12-18 वर्ष की लगभग 40 युवा किशोरियों को सेवा प्रदान करता है।

**रिश्ता और विश्वास:** मेघा का मानना है कि पुस्तकालय के शिक्षक और बच्चों के बीच संबंध बनाना, यह पुस्तकालय कार्यक्रम का एक मूल उद्देश्य है। कार्यक्रम की गतिविधियों द्वारा बच्चे स्वीकृत और अवेक्षित महसूस करते हैं। जितना वे कहानियाँ पढ़ते हैं, उतनी ही उनकी कहानियाँ सुनी भी जाती हैं। बच्चे और युवा किशोरियाँ, क्रोध और शोक से झुझते हुए किताबों में आराम और सुख पाते हैं। कभी-कभी किताबें उन्हें खुद को समझने और अभिव्यक्त करने के तरीके खोजने में भी मदद करती हैं।

**एफ.एल.एन कनेक्ट:** एफ.एल.एन का एक हिस्सा होने के नाते, मेघा को एक और समान समूह से संबंधित होने का एक मौका मिलता है । उनका मानना है कि FLN अपने प्रशिक्षण का विस्तार पुस्तकालय प्रथाओं को शामिल करने के लिए कर सकता है जो बच्चों के विशिष्ट संदर्भों और जीवित अनुभवों से सूचित हो। वह पुस्तकों और कहानियों की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास रखती हैं और सभी के लिए पढ़ने के अधिकार को स्थापित करने की आवश्यकता की वकालत करती हैं- विशेष रूप से उनके लिए जो ऐसे मौकों से वंचित रहे है और हमारे समाज के हाशिए पर छोड़ दिए गए हैं ।

**अध्वन फाउंडेशन : वेबसाइट:** https://www.adhvan.org, **ईमेल** megha@adhvan.org **फेसबुक** :@AdhvanIndia

# किताब - कोना

## FLN किताबों के सुझाव

### थाना, मुस्कान प्रकाशक

एक बच्चा और उसकी माँ काम के लिए घर से बाहर निकलते हैं। उन्हें पुलिस द्वारा संदिग्ध के रूप में उठाया जाता है और दिन के लिए थाने में रखा जाता है। पढ़िए बच्चे का थाने में बिताए दिन का लेखा-जोखा ।

### मिर्ची का चुरा, बामा द्वारा मुस्कान प्रकाशक

पचयम्मा के जीवन में एक दिन का गवाह, भूमिहीन दलित मजदूर होने के दैनिक संघर्षों से जूझती एक साहसी महिला

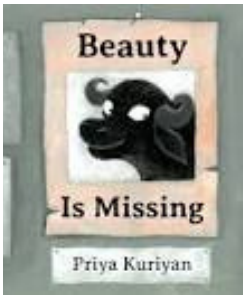


### लापता सुंदरी, प्रिया कुरियन द्वारा

टेसम्मा की लापता भैंस - सौंदर्य को खोजने के लिए ट्रैकिंग सुराग में इंस्पेक्टर जिंसी के साथ जुड़ें।

### झूठ का परदा, आशा नेहेमिया द्वारा, चित्रकार: ऐन्द्री चक्रवर्ती, प्रथम बुक्स प्रकाशक

घरेलू हिंसा, धैर्य और आशा के बारे में एक कहानी।

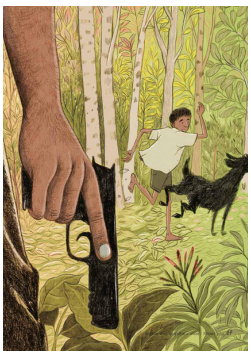

**''पूजे और उसका स्कूल' : जैसिंटा द्वारा, चित्रकार: प्रिया कुरियन, एकतारा प्रकाशक से साइकिल पत्रिका का अंक अगस्त से सितंबर 2022**

12 साल के बच्चे की कहानी जिसे पुलिस ने पकड़ा और नक्सली होने का आरोप लगाया

**''एक दिन' : 13 साल की आशिकाना द्वारा, चित्रकार: भार्गव कुलकर्णी एकतारा के 'तिताहरी का बच्चा' से**

एक बच्ची अपने काम के दिन, कूड़ा बीनने, केक खाने की इच्छा के बारे में बताती है, साथ ही यह भी दिखाती है कि अति-पुलिसिंग और नियमित रूप से पुलिस द्वारा संदिग्धों के रूप में उठाए जाने के कारण समुदाय को इन चीजों को सामना करना पड़ता है ।

# सिर्फ एक सवाल

हमारे अपने लिए और पुस्तकालय चलाने के बारे में सोचने के लिए ।

क्या मेरे समुदाय के सभी सदस्य मेरे पुस्तकालय का उपयोग कर रहे हैं?क्या मेरा पुस्तकालय लड़कियों, महिलाओं, अन्य लिंग के लोगों, विकलांग लोगों, विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों के लिए सुरक्षित और स्वागत योग्य है? क्या मेरी लाइब्रेरी में यह समझने की योजना है कि कौन बाहर रह गया है और उन्हें कैसे आमंत्रित किया जाए? क्या मेरे समुदाय में ऐसे लोग हैं जो सामुदायिक स्थानों और सार्वजनिक संस्थानों से कटे हुये हैं अन्यथा बहिष्कृत हैं? क्या मेरा पुस्तकालय उन्हें पुस्तकालय सेवाएँ प्रदान करने में भूमिका निभा सकता है?

Translation Credits: Aditi Mittal, Dr Amit Yadav, Riya Parikh, Uma Singh, Pluto.
Write to madhumita.rajan@gmail.com with feedback, queries and requests to feature your library or work